International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Issue: 1 | Vol.: 9 | Jan.-Feb. Mar.-2022 | Pages: 54–57 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

आचार्य डॉ0 राम किशोर मिश्र के संस्कृत ग्रन्थों में राष्ट्रीय चेतना

मनोज कुमार जोशी
सहायक प्राध्यापक संस्कृत
गुरूनानक देव स्नातकोत्तर महाविद्यालय
नानकमत्ता साहिब, ऊधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)

Received : 07/02/2022 ***1st BPR*** : 12/02/2022 ***Revised*** : 20/02/2022 ***2nd BPR*** : 27/02/2022 ***Accepted*** : 05/03/2022

Abstract

आज भारत में कुछ लोग भारत देश से अलग होने की बात करते हैं उसके लिए वे लोग अनेक प्रकार के आन्दोलनों के माध्यम से हिंसक प्रकारों का अवलंबन करके जनमानस व सरकार को बाध्य करते हैं। इस अलगाववाद की भावना को दूर करने के लिए अपने देशवासियों में राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना देश प्रेम स्वाभिमान आत्मबलिदान की भावना आदि जागृत करने के लिये गंभीरता से विश्लेषण करना है। किसी भी ग्रन्थ की श्री वृद्धि में किसी कवि का क्या योगदान रहा है? इसका ज्ञान उसके कृतियों का अवलोकन करके ही पता चलता है कि उसके ग्रन्थों में इसकी भावनाएं किस–किस के प्रति हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भी कवि का राष्ट्र भावनाओं का अध्ययन करना है।

***Key words*:** आचार्य डॉ0 राम किशोर मिश्र के संस्कृत ग्रन्थ एवं राष्ट्रीय चेतना।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा दोनों में से एक के अभाव में दूसरी की कल्पना आकाश कुसुम की भाँति कोरी मात्र है। सत्य सनातन भारतीय संस्कृति का मूल उत्स देववाणी संस्कृत है। संस्कृत दिव्य वाणी होते हुए भी इस युग में जग–जन की वाणी नहीं होने के कारण इस भाषा में रचित ग्रन्थों में उपनिषद् अकाट्य ज्ञान और सुदीर्घ परम्परा को नहीं समझ पाते। दीर्घकाल तक परतन्त्रता की की वेणियों में जकड़े होने के कारण हम सभी श्रेष्ठ वस्तुओं विचारों और विशिष्ट ज्ञान को किसी दूसरे देश से ही भारत में आने का विचार धारण कर पाल लेते हैं। जबकि यथार्थ इससे इतर होता है।

भारतवर्ष में एक राष्ट्र के रूप में की जाने वाली संकल्पनाओं और तत्–विषयक राष्ट्रीयता के आधार स्तम्भ अधिष्ठान और उसको चिति के सम्बन्ध में कुछ लोग भ्रमवशात् इसे वैदेशिकों की देन ही मानते हैं। जबकि सत्य यह है कि विश्व के प्राचीनतम ज्ञान का सर्वप्राचीन कोश ऋग्वेद से लेकर संस्कृत साहित्य का लौकिक साहित्य राष्ट्र की सभी संकल्पनाओं और उससे सम्बद्ध विचारों से भरा पड़ा है। न केवल प्राचीन काल में उपनिषद् संस्कृत साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत है अपितु आज भी विद्वद्जनों द्वारा संस्कृत भाषा के ग्रन्थों में इस राष्ट्रीय चेतना से वे अनभिज्ञ ही रहते हैं। बड़ी–बड़ी संगोष्ठियों में विभिन्न विषयों को केन्द्रीय विषय बनाकर विचार मंथन होता है परन्तु वह सर्वजन सुलभ नहीं हो पाता। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि देश भर के चुने हुए विद्वानों में एक आधुनिक संस्कृत साहित्य के लेखन में रव्याति प्राप्त डॉ0 आचार्य राम किशोर मिश्र के ग्रन्धों में राष्ट्रीय चेतना विषयक तथ्यों को जन–जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है जो कि अध्ययनीय है।

राष्ट्र–

वस्तुतः भारत में 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग बहुत प्राचीनकाल से ही होता रहा है। यजुर्वेद का दशम अध्याय इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। राज्याभिषेक के अवसर पर पढ़े जाने वाले मंत्रों में राजा द्वारा 'राष्ट्र' में 'देहि' कहलाकर राष्ट्र प्राप्ति की उत्कट लालसा को प्रदर्शित किया गया है। उपनिषदों का क्रान्तिकारी संदेश जो जातीय उत्थान के लिए किसी भी युग में विस्मृत नहीं हो सकता 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' अर्थात उठो जागो और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सदा संघर्षशील रहो। शतपथ ब्राह्मण में इस विचार धारा को इस प्रकार व्यक्त किया गया है। ''श्रीवै राष्ट्रम्''[1] अर्थात समृद्धियुक्त ओजस्वी जनसमूह ही राष्ट्र है।

राष्ट्र को लेकर अनेक देशी–विदेशी विद्वानों साहित्यकारों ने अपने विचारों को परिभाषित करने का प्रयास किया है। जिर्मन ने संयुक्त भावना पर बल देते हुए बताया है कि ऐसे जनसमूह जो विशिष्ट भू–भाग के प्रति तीव्रता अंतरंगता और गौरव की संसृष्ट भावना से संयुक्त हो, वह राष्ट्र है।''[2] रुपर्ट इयर्सन ने राष्ट्र का प्रधान आधार संस्कृति को माना है उनके अनुसार परम्परागत आदर्शों तथा भावि लक्ष्य की एकता से युक्त जन–समूह ही राष्ट्र है[3] जबकि किसी निश्चित भू–भाग के निवासियों द्वारा यदि स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न जारी हो और वर्तमान में वह परतन्त्र हो तो भी उसे 'राष्ट्र' की संज्ञा दी

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Issue: 1 | Vol.: 9 | Jan.-Feb. Mar.-2022 | Pages: 54–57 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

जा सकती है।[4] प्रोफेसर बगैस ने राष्ट्र के जातीय आधार पर बल देते हुए बताया है कि ''राष्ट्र जातीय एकता के सूत्र में बँधी हुई वह जनता है जो किसी अखण्ड भौगोलिक प्रदेश पर निवास करती है। जातीय एकता से उनका अभिप्राय ऐसी आबादी से है। जिसकी एक सामान्य भाषा और साहित्य सामान्य परंपरा अथवा इतिहास, सामान्य रीति–रिजाव तथा उचित और अनुचित की सामान्य चेतना हैं।[5] राष्ट्र ऐसे लोगों का समूह है जो घनिष्ठता अभिन्नता और प्रतिष्ठा की दृष्टि से संगठित है और एक मातृभूमि से संबंधित है।[6] राष्ट्र को परिभाषित करते हुए अन्य एक स्थान पर संगठन की भावना को देखा गया है। भौगोलिक एकता जनगण की राजनैतिक एकता और सांस्कृतिक एकता तीनों के समुच्चय का नाम राष्ट्र है।

राजनीति शास्त्र के विद्वानों और साहित्यकारों ने राष्ट्रीय चेतना अथवा राष्ट्रीयता के पोषक तत्वों के बारे में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हुए जिन तत्वों को स्वीकार किया है, वे निम्नलिखित हैं–

भौगोलिक एकता–

भौगोलिक एकता के अभाव में राष्ट्रीय भावना के विकास में बहुत अधिक बाधा उपस्थित होती है।[7] अर्थात् 'राष्ट्र' को जन्म देने के लिए किसी भी जन समुदाय के पास एक निश्चित भू–भाग की आवश्यकता होती है। भौगोलिक सीमाओं से अवरुद्ध एक निश्चित भू–भाग का होना राष्ट्रीयता के लिए अत्यधिक अनिवार्य है। कोई भी जाति अपनी भूमि के बिना राष्ट्रीय चेतना को प्राप्त नहीं कर सकती, चाहे वह कितनी ही वैभवशाली और सम्पन्न क्यों न हो। अतएव किसी भी संबंध स्थापित करने के लिए वहां पर काफी समय तक उस क्षेत्र से रागात्मक रहना आवश्यक है।

अपनी प्राकृतिक सीमाओं से युक्त भू–क्षेत्र के प्रति वहाँ के निवासियों का महत्व बढ़ता जाता है और यही ममत्व का भाव राष्ट्रीय चेतना को उत्पन्न करता है। इसी प्रकार जातीय एकता राष्ट्रीय चेतना का महत्वपूर्ण पोषक तत्व है। एक ही वंश या जाति के लोगों में आपसी मेल एवं सहयोग की भावना का विकास हो सकता है। ऐसे जनसमुदायों में स्वाभाविक एकता के दर्शन होते हैं। जो कि राष्ट्रीय चेतना को उत्पन्न करने के लिए आवश्यक है।

सांस्कृतिक ऐतिहासिकता परम्परा की एकता का भी राष्ट्रीयता के विकास में बड़ा योगदान रहता है। प्रत्येक देश की अपनी–अपनी सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परम्परा होती है। देशवासियों में पाये जाने वाले संस्कार , समान रीति–रिवाज समान वेशभूषा उनकी सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परम्परा की एकता जनता में राष्ट्रीय एकता के भावना को जाग्रत करती है।

भाषिक एकता–

भाषा की समानता राष्ट्रीय चेतना के निर्माण एवं संवर्धन के कार्य में महत्वपूर्ण अंग है। राष्ट्र की आत्मा को समझने के लिए राष्ट्र की भाषा को जानना अत्यधिक अनिवार्य है। बिना भाषा जाने राष्ट्र के हृदय–स्थल को स्पर्श करना कतई संभव नहीं। मातृभूमि के प्रेम के साथ मातृ भाषा और राष्ट्र भाषा का प्रेम भी बढ़ाना चाहिए। ताकि अनेक प्रदेश से बने राष्ट्र में अनेक प्रादेशिक भाषाएं होती है जिसके साथ भाषावाद के बढ़ने का खतरा भी रहता है। यही कारण है कि राष्ट्रभाषा जितनी बलवान होगी उतना ही वह राष्ट्र वलिष्ठ होगा।

चेतना

चेतना शब्द सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो 'चेत' शब्द से बना है, 'चेत' शब्द 'चेतस्' का पर्याय है। जो संस्कृत से ग्रहण किया गया है। 'चेत' या 'चेतस' शब्द संस्कृत का है जिसका अर्थ आत्मा जीव, परमेश्वर, मुनष्य, प्राणी, मन आदि से है। 'चेतना' शब्द अकर्मक क्रिया के अर्थ में होश में आना बुद्धि विवेक से काम लेना सावधान के अर्थ में प्रयुक्त होता है और सकर्मक क्रिया के अर्थ में सोचना विचारना आदि अर्थ भी देता है।

चेतना शब्द का प्रयोग ज्ञान, संज्ञा एवं प्राण के रूप में किया जाता है।[8]

चेतना के दो स्तर अधिक उभर आते हैं– बौद्धिक और आत्मिक।

किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व उस राष्ट्र की 'चिति' अर्थात् चेतना शक्ति पर प्रतिष्ठित होता है। इसी 'चिति' के उत्थान और पतन के साथ राष्ट्र का उत्थान और पतन होता है।[9] किसी भी राष्ट्र के प्राणतत्व समान चेतन से ही उस राष्ट्र की गति अवगति का परिचय मिलता है। वास्तव में चेतना को मनीषियों ने प्राणतत्व या आत्मतत्व के रूप में स्वीकारा है। चेतना हीन जीवन नीरस और बोझ रूप लगने लगता है जबकि चेतना मुक्त जीवन उर्जा सभर होता है जो निरन्तर गति प्रदान करता है।

राष्ट्रीय चेतना या राष्ट्रीयता

'राष्ट्र' में 'ईय' प्रत्यय लगाने से 'राष्ट्रीय' शब्द बनता है। यह एक विशेषण है 'राष्ट्र' पुरूष वाचक संज्ञा का शब्द है जिसका अर्थ है ''राष्ट्र का राष्ट्र' की अथवा राष्ट्र सम्बन्धी।[10] परन्तु 'राष्ट्र' का यह राष्ट्रीय रूप संस्कृत व्याकरण में असिद्ध माना गया है, जबकि भाषा में प्रयुक्त होता आ रहा है।

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Issue: 1 | Vol.: 9 | Jan.-Feb. Mar.-2022 | Pages: 54–57 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

अंग्रेजी में भी 'राष्ट्रीय' का ठमसवदहपदह जव ं ज्ञपदहकवउ[11] अर्थात् राष्ट्र का राष्ट्र सम्बन्धी ऐसी ही अर्थ लिया जाता है। 'राष्ट्र'' पुरूषवाचक संज्ञा जिस तरह 'राष्ट्रीय' विशेषण में बदलती है उसी तरह 'राष्ट्रीय' विशेषण को पुनः संज्ञा रूप दिया जाए तो वह स्त्रीवाचक 'राष्ट्रीयता' इस तरह बनता है। जिसका अर्थ है– किसी राष्ट्र के विशेष गुण अपने देश या राष्ट्र का उत्कट प्रेम।[12] वस्तुतः यह राष्ट्रभिमान, राष्ट्रप्रेम या राष्ट्र भक्ति ही राष्ट्रीय चेतना है। आचार्य डॉ0 राम किशोर मिश्र के लिए राष्ट्र, संस्कृति और मुनष्य त्रिवेणी का संगम है राष्ट्रीयता अथवा राष्ट्रीय चेतना यह बात वह सदैव ध्यान में रखते हैं कि राष्ट्रीय चेतना ही जातीय तेजस्विता का पर्याय भाव है।[13] उनका यह कथन राष्ट्रीयता की आवश्यकता को रेखांकित करता है। ''वह राष्ट्र राष्ट्र नहीं है जिसकी रीढ़ की हड्डी नैतिकता से न बनी हो। जहाँ ऊँचा सिर नहीं हो सकता, वहाँ कोई सिर उतारकर क्यों रखेगा? सिर देने की बात तो उसी राष्ट्र के मस्तक में आएगी जिसका ललाट बहुत ऊँचा हो। किसी राष्ट्र का निर्माण तब तक नहीं हो सकता जब तक उसके पास अभिमान और आदर्शों का बल अभिमान करने योग्य वस्तुओं की उपस्थिति और बलिदान का निश्चय न हो।[14]

काव्यकिरणावलिः की गीत जवाहर नामक किरण में कवि ने भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के जीवन चरित्र के माध्यम से राष्ट्र के प्रति चेतना जाग्रत करने का संदेश दिया है कि आज राष्ट्र को ऐसे ही राजनेताओं की आवश्यकता है, जिन्होंने भारत भूमि पर जन्म लेकर इस भूमि को धन्य किया है। कवि उनकी गौरव गाथा का वर्णन इस प्रकार करता है।

प्रथमः प्रधानमंत्रीत्वमभूर्जवाहर!
चाणक्यशुक्र तुल्यस्त्वं राजनीतौ।
कवि कालिदास प्राचेतस समसमृद्धा
रचना तवाऽत्र बुधवर। मकरन्दकन्दम्
वन्दे महापुरूष! तव चरणारविन्दम्।[15]

इसी प्रकार प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के नायक मंगलपाण्डेय के जीवन चरित्र को लेखक ने 'निबन्धनिवन्ध' में संकलित निबन्ध के माध्यम से दर्शाया है। मंगल पाण्डेय एक ऐसा वीर सैनिक था। जो हंसते हुए अपनी मातृभूमि के लिए शहीद हो गया। आज के युग में ऐसे ही वीर नौजवानों की आवश्यकता है जो अपनी मातृभूमि के लिए प्राण न्यौछावर करने के लिए तैयार हो, कवि ने राष्ट्र भक्तों का वर्णन करते हुए राष्ट्रीय भावनाओं को व्यक्त करने के साथ राष्ट्रीय चेतना को दर्शाया है।

कवि ने राष्ट्रीय चिन्तन के साथ–साथ अपने देश के आधुनिक राजनेताओं के कारण देश की खराब स्थिति को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करते हुए आधुनिक नेताओं पर कुछ इस प्रकार कटाक्ष किया है

ये भुमुक्षापिपासाभ्यां पीडिताः सन्ति हि रूदन्तः।
जनानां तेषां समीपे गता नेतारः कियन्तः?
मतानां याचनाकाले न जाने ते किं वदन्ति?
पंचवर्षानन्तरं ते कथित वक्तव्यं स्मरन्ति। अहो! निर्वाचिता निजमस्तित्वमपि विस्मर्तुं इच्छथ?[16]

पुनः मिश्र जी कहते हैं–

मातृभूमेः सेवनादथ कथं यूयं भवथ विमुखाः?
देशवासि विपत्ति नाशं कर्त्तुमधुना भवथ प्रमुखाः।
दीनहीन विपिन्नपार्श्वे कुशल पृच्छायै न याताः?
न यूयं रूदतां जनानामश्रुप्रोंछणपराजाताः।
भारत भूमिं कथमिमां मुस्लिमाधीनां कर्त्तुमिच्छथ? भारतं भो।
हिन्दु राष्ट्रं कथं नो निर्मातु मिच्छथ?[17]

जिन लोगों के हाथ में राजनीतिक अधिकार आ जाता है वे दिग्भ्रमित हो देश व जनता से पूर्व अपनी चिन्ता में लिप्त हो स्व कल्याण में रत हो जाते हैं। इसी सच्चाई से कवि ने सीधा साक्षात्कार कराया है देश के ऐसे नेताओं की नीति से कवि को राष्ट्र की चिन्ता है और क्षुब्ध होते हुए एक कर्त्तव्य निष्ठ एवं सच्चरित्र नेता का चयन करने हेतु राष्ट्र एवं समाज को चेताने को भाव व्यक्त किये हैं।

कवि ने अपने ग्रन्थों में वर्तमान परिस्थिति व्यवस्था पर चिन्ता व्यक्त की है और वहीं अन्याय, शोषण स्वार्थमय होकर देश में शासन करने वालों से चिन्तित होकर समाज को उत्तम शासक को नियुक्त करने की सलाह की भावना भी प्रकट की है।

कवि ने अपने ग्रन्थों में राष्ट्र के प्रति चिन्ता करने के साथ विश्वास भी किया है कि एक दिन अन्धकार का यह कुहासा जो आज मानवता के लिए अभिशाप बन गया है। वह एक न एक दिन अवश्य हटेगा।

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Issue: 1 | Vol.: 9 | Jan.-Feb. Mar.-2022 | Pages: 54–57 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

निष्कर्ष :–

इस प्रकार राष्ट्रीय चिन्तन एवं भावनाओं तथा चेतना से ओतप्रोत मिश्र जी के ग्रन्थों में राष्ट्रीय ऊर्जा को जागृत करने का विनम्र प्रयास किया गया है। जिनकी आज के सन्दर्भों में अत्यन्त आवश्यकता है, राष्ट्रीयता उनके ग्रन्थों का मूल स्वर है। भविष्य में भी उनके ग्रन्थ हमें राष्ट्रीय चिन्तन की प्रेरणा देते रहेंगे।

सन्दर्भ सूची–

1. शतपथ ब्राह्मण– 6–73.7
2. नई कविता में राष्ट्रीय चेतना पृ0 24 डां देवराज शर्मा
3. डॉ0 विष्णुदत्त राकेश – पन्त जी का नवीन बोधकाव्य
4. सिद्धान्त कौमुदी
5. हिन्दी कविता में युगान्तर डॉ0 सुधीर पृ0 164,165
6. वही
7. राष्ट्र की उत्पत्ति और भारतीय राष्ट्रीयता
8. काव्यकिरणावलिः
9. काव्यकिरणावलिः
10. नारीकथाऽमृतम् पृ0–12
11. किशोरकथावली पृ0–81
12. काव्यकिरणावलिः (सप्तम किरण) गीत संख्या (6)
13. शतपथ ब्राह्मण– 6–73.7
14. नई कविता में राष्ट्रीय चेतना पृ0 24 डां देवराज शर्मा
15. वही
16. राजनीति शास्त्र के सिद्धान्त पृ0 83,84 – रामचन्द्र अग्रवाल
17. हिन्दी कविता में युगान्तर डॉ0 सुधीर पृ0 164,165

